

अभूमिज (अ + ज) adj. auf ungeeignetem Boden gewachsen: धान्यम्  
Suçr. 1, 199, 19.

अभृत (3. अ + भृत) adj. keinen Lohn beziehend M. 8, 231.

अभेद (3. अ + भेद) m. Ungetrenntheit: पदभेदेन पादानां विभागो ऽभि-  
समीक्ष्यतु RV. Prāt. 17, 14. विप्रयोरभेदः der beiden Körper Bhāṭṭa. 1, 23.  
अभेदेन च युध्येत बलं रत्नेत्परस्परम् Hit. III, 79.

अभेद्य (3. अ + भेद्य) 1) adj. nicht spaltbar, undurchdringlich: कवच  
R. 6, 79, 65. दंशन Dev. 2, 27. Davon nom. abstr. °त्व R. 3, 7, 21: स्रस्त्रभिः °.  
— 2) n. Diamant Rāṅ. im ÇKDr.

अभोगर्घ्वन् (3. अ - भोज् + क्न्) adj. den Kargen schlagend, von den Ma-  
rut, die den Mächten der Luft Feuchtigkeit abgewinnen, RV. 1, 64, 3.

अभोजन (3. अ + भो) n. das Nichtessen, das sich -Enthalten von Es-  
sen Abh. Br. in Ind. 1, 40, 3. Kāt. Çr. 14, 3, 20. 17, 3, 7. 25, 4, 5. M. 11,  
166. 203. 215.

अभोज्य (3. अ + भोज्य) adj. 1) zu essen verboten: अभोज्यान् adj. dessen  
Speise man nicht genießen darf M. 4, 221. — 2) = dem eben bespr.  
अभोज्यान् M. 11, 152: अभोज्यानां तु भुक्तावन्म.

अभ्यग्नि (अभि + अग्नि) 1) m. N. pr. ein Sohn des Etaça (Aitaça),  
vom Geschlechte der Aurva (Bhṛgu): तस्मादाङ्गुर-अभ्यग्ने एतशायना  
और्वाणां पापिष्ठा इति At. Br. 6, 33. तस्मादैतशायना आजानेय्या सतो  
भृगूणां पापिष्ठाः Çāṅkh. Br. 30, 5. — 2) adv. zum Feuer hin: अभ्यग्नि  
शल्भाः पतति P. 2, 1, 14, Sch. Vgl. u. कार्.

अभ्यग्र (अभि + अग्र) 1) adj. nahe AK. 3, 2, 17. — 2) Nähe H. 1480.

अभ्यङ्ग (von अङ्ग् mit अभि) m. 1) das Salben, Bestreichen mit fetti-  
gen, öligen Stoffen: (वर्जयेत्) अभ्यङ्गमञ्जनं चाद्वयोः M. 2, 178. Suçr. 1, 36,  
15. 2, 5, 12. 94, 9. 137, 18. Kumāras. 7, 7. — 2) Salbe Suçr. 2, 248, 2. 4. 10.  
422, 20. Kathās. 4, 53. °मर्दन Pañkāt. 238, 7.

अभ्यञ्जन (wie eben) n. 1) Einreibung mit öligen Stoffen Rāṅ. im  
ÇKDr. Kāt. Çr. 7, 3, 14. 8, 8, 17. 20, 4, 8. आज्ञनाभ्यञ्जने (Sch.: आज्ञनम-  
ह्योरभ्यञ्जनं च पादयोः) कृत्वा 24, 4, 25. 24, 3, 13. Kauç. 87. 88. 92. भोज-  
नाभ्यञ्जनादानाद्यदन्यत्कुरुते तिलैः M. 10, 91. अभ्यञ्जनं स्नानं च गात्रो-  
त्सादनमेव च । गुरुपत्न्या (obj.) न कार्याणि 2, 211. आज्ञनाभ्यञ्जनीय Name  
eines 36-tägigen Soma-Opfers, bei dem tägliches Einsalben stattfindet,  
Kāt. Çr. 24, 3, 10. — 2) ölige Salbe, Oel H. 417. तेभ्य आगतेभ्य आज्ञ-  
नाभ्यञ्जने प्रयच्छत्येष कृ मानुषो ऽलंकारः Çat. Br. 13, 8, 5, 7. Åçv. Çr.  
11, 6. — 3) Schmuck: आ नौ भर् व्यञ्जनं गामश्चमभ्यञ्जनम् । सचा मृना  
हिरण्ययो ॥ RV. 8, 66, 2. चित्तिरा उपबर्हणं चतुरा अभ्यञ्जनम् 10, 83, 7.  
आत्मा पितुस्तन्वृत्सं श्रोत्रोदा अभ्यञ्जनम् 8, 3, 24.

अभ्यधिक (अभि + अधिक) adj. 1) überschüssig, hinzukommend, mehr  
seiend: एष चाभ्यधिको ऽस्माकं गुणः R. 5, 82, 13. कर्तृणां कारणं हेतुर्गुण-  
युक्तं गुणावहम् । मल्लश्चाभ्यधिको युद्धे 16. — 2) das gewöhnliche Maass  
überschreitend, vorzüglich, ausserordentlich: चकार युद्धे ऽभ्यधिकं च वि-  
क्रमम् R. 6, 90, 33. — 3) überlegen, vorangehend, mehr geltend, höher  
stehend, mehr, grösser, stärker, heftiger, vorzüglicher: न तत्समश्चाभ्यधि-  
कश्च दृश्यते Çvetāçv. Up. 6, 8. न तत्समो ऽस्त्यभ्यधिकः कुतो ऽन्यः Bhāg.  
11, 43. यथास्याभ्यधिका न स्युर्मित्रोदासीनशत्रवः M. 7, 177. अस्माकमतिके  
मा स्याः सर्वत्राभ्यधिका च सा Kathās. 10, 119. तथा तथा तुलायो स कोपेतो  
ऽभ्यधिको ऽभवत् 7, 94. ऊनं चाभ्यधिकं वापि लिखेद्यो राजशासनम् Jāṅ.

2, 295. Das wodurch oder woran man Jmd überlegen ist, steht im instr.  
oder geht im comp. voran: षड्यो गुणेभ्यो ऽभ्यधिका विहीनान्मन्या-  
महे — पाण्डुपुत्रान् Draup. 5, 11. वीर्याभ्य° Pañkāt. IV, 23. प्रमाणाभ्य°  
I, 371. R. 4, 62, 13. Der übertroffene Gegenstand im abl.: नो दुःखादु-  
खमभ्यधिकम् N. 11, 16. आगमो ऽभ्यधिका भोगात् Erwerb gilt mehr als  
Niessbrauch Jāṅ. 2, 27. धान्यं दशभ्यः कुम्भेभ्यो कुरते ऽभ्यधिकं वधः M. 8.  
320—322. Brāhmaṇ. 1, 8. Kathās. 20, 153. im instr.: प्रभुः क्षमावाञ्जीरश्च  
दाता चाभ्यधिका नृपैः N. 21, 13. geht im comp. voran: भोजनाच्छाभ्य-  
धिका (mehr als zur Speise und Kleidung erforderlich ist) समृद्धिर्नास्ति  
Pañkāt. 134, 8. 22. 132, 25. — Vgl. अधिक.

अभ्यधिकम् (von अभ्यधिक) adv. in hohem Grade, ausserordentlich  
vorzüglich: प्रवात्यभ्यधिकं गुणाः R. 5, 73, 59.

अभ्यधम् (von अभि + अध) adv. nach dem Wege hin, auf den Weg:  
शम्यो प्राप्स्यति Kāt. Çr. 24, 6, 17.

अभ्यर्धे (wie eben) adv. auf dem Wege: यैरभ्यर्ध उत पद्वे चित् AV.  
4, 28, 2.

अभ्यनुज्ञा (von ज्ञा mit अभि + अनु) f. 1) Anerkennung, Zustimmung  
Åçv. Gṛh. 4, 8. — 2) Entlassung, Beurlaubung: निर्वाच्येति भोऽ इति चे-  
दना स्यान्निरुक्तं औ भोऽ इति चाभ्यनुज्ञा RV. Prāt. 13, 6. कृताभ्यनुज्ञा der  
die Erlaubniss zum Gehen erhalten hat, entlassen R. 5, 76, 24. f. °ज्ञा  
Kumāras. 5, 7. दत्ताभ्यनुज्ञा R. 6, 82, 55. प्राप्ताभ्यनुज्ञा Kathās. 26, 287. Mit  
dem obj. comp.: सीताभ्य° R. 2, 30, in der Unterschr. — 3) Befehl: व-  
सिष्ठेन कृताभ्यनुज्ञः Ragh. 2, 69.

अभ्यनुज्ञान (wie eben) n. Befehl, Aufforderung: भरद्वाजाभ्यनुज्ञानाच्चि-  
त्रकूटस्य दर्शनम् R. 1, 3, 14.

अभ्यन्तर (अभि + अन्तर) 1) adj. f. आ. a) der innere, innerlich, im In-  
nern (eines Gebäudes u. s. w.) sich aufhaltend: गुल्माभ्यन्तरविद्वधीन्  
Suçr. 1, 137, 18. अभ्यन्तरगृहम् Kathās. 4, 51. Sāṅkhjak. 33. Colebr. Misc.  
Ess. I, 392. अभ्यन्तराः स्त्रियः R. 6, 112, 43. 4, 19, 4. अभ्यन्तराज्ञनात् Ka-  
thās. 23, 66. अभ्यन्तरशोणिते wenn das Blut noch inwendig ist, wenn  
die geschlagene Stelle nur mit Blut unterlaufen ist Jāṅ. 3, 293. गणा-  
भ्यन्तर Mitglied einer Corporation M. 3, 154. — b) eingeweiht, vertraut  
mit (loc.): मल्लेष्टभ्यन्तराः के स्युः R. 6, 5, 19. मल्लेष्टभ्यन्तरकृताः 40, 14. Vgl.  
im Prākṛt.: संगीदृष्टं अन्तरम् Mālav. 66, 7. अण्मन्तरा बु अन्हे मद्-  
णगदस्स वुत्तस्स Çāk. 34, 2. — c) der nächste, nah verwandt: त्यक्ता-  
श्चाभ्यन्तरा येन बाह्याश्चाभ्यन्तरकृताः Pañkāt. I, 290. — 2) n. a) das In-  
nere: प्राणापनौ नासाभ्यन्तरचारिणौ Bhāg. 5, 27. Çāk. 167. Pañkāt. 221,  
24. Hit. 17, 7. Kathās. 2, 50. Ragh. 3, 9. अभ्यन्तरम् in's Innere, hinein:  
तत्प्रवेश्यतामभ्यन्तरमयम् Māṅkh. 22, 18. 24. 92, 11. अभ्यन्तरं स्वनिकटं  
विप्रे प्रवेशयत् Kathās. 26, 46. वासाभ्यन्तरं प्रविशाम् Dhūrtas. 73, 10. —  
b) Zwischenraum AK. 1, 1, 3, 7. H. 1460. षण्मासाभ्यन्तरे Pañkāt. 5, 6. 186.  
18. Hit. 8, 5.

अभ्यन्तरम् (von अभ्यन्तर) adv. einwärts Suçr. 2, 319, 1.

अभ्यन्तरिक (अभ्यन्तर + कर्) 1) einweihen in Etwas, vertraut machen  
mit Etwas; s. u. अभ्यन्तर 1, b. — 2) zu seinem Nächsten machen, s. u.  
अभ्यन्तर 1, c.

अभ्यमन (von 2. अम् mit अभि) n. Anfall, Bedrängung Nir. 6, 12. 10, 17.

अभ्यमनवत् (von अभ्यमन) adj. anstürmend, bedrohend Nir. 6, 12.